बरज रहे हैं कूल

धुले धुले से वृक्ष हैं
खिले खिले हैं फूल
अलसाए पर्वत पडे
औढ गुनगुनी धूप

खिल खिलकर हंसती हवा
मह मह करते फूल
लाल हो गए शर्म से
टेसू के सब फूल

गोरी तो चुप है मगर
आखों करती घात
नयन नशीले हो गए
आते ही मधुमास

फूल कर रहे भ्रमर से
मीठी सी कुछ बात
बांच रही पर्चा हवा
मौसम हंस है बेबात

मतवाले यौवन ने तोडे
संयम के सब कूल
नदी उफनती आ रही
बरज रहे हैं कूल